REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 8 | MAY - 2022

मन्नू भंडारी की कहानियों में संवाद–योजना

डॉ. पुष्पराज लाजरस
प्राचार्य शासकीय नवीन महाविद्यालय पाली, जिला कोरबा (छ.ग.)

प्रस्तावना –

कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व संवाद या कथोपकथन होता है। संवाद कहानी की कथानक रूपी देह में रक्त के प्रवाह की भांति होते है। संवाद कहानी में कहीं भावात्मक होता है, तो कहीं सामान्य विशेष विश्लेषणात्मक अथवा वस्तुपरक होते है। कभी संवाद व्यक्ति के मन की परतें खोलते है तो कभी सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करते हैं। कभी कहानी के संक्षिप्त संवाद में बागर में सागर दिखता है तो कभी लम्बे संवाद में भावो की सरिता प्रवाहित होती है।

कहानी में कथावस्तु चरित्र परिवेश और उदेश्य की भी अलग–अलग विधियाँ होती है। कथावस्तु के विस्तार में योगदान देने वाले संवाद, चरित्र चित्रण में उपादेय संवाद, परिवेश का परिचय देने वाले संवाद, कहानी के उद्देश्य को उजागर करने वाले संवाद होते है।

कथावस्तु को संवाद गतिशील बनाते है। कथावस्तु की एकरस्ता को तोड़ने और उसे सजीव बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। संवाद पात्रों के चरित्र को उजागर करने में महत्वपूर्ण होते है। जैसा मनुष्य का मन होता है वैसा ही उसकी वाणी होती है अर्थात पात्रो के संवाद वास्तव में उनके चरित्र का दर्पण होते है। पात्रों की मनोवृत्ति के माध्यम से उनके चरित्र के संबंध में संवाद सहज ही टिप्पणी कर देते है। परिवेश का परिचय दे सकने की क्षमता को कहानी के संवाद की महत्वपूर्ण विशेषता माना जाता है। संवाद परिवेश चित्रण का सशक्त माध्यम होते है। कहानी के घटनास्थल के गली, मोहल्ले गाँव, शहर और देश का परिचय कहानी के संवाद में मिल सकता है। कहानी के संवाद केवल परिवेश का परिचय ही प्रस्तुत नहीं करते अपितु उसे जीवन्त बना देते है। कहानी के उद्देश्य को उजागर करने की क्षमता भी संवाद की महत्वपूर्ण विशेषता है। अनेक बार कहानी के किसी पात्र के संवाद के माध्यम से कहानी का मूल उद्देश्य सहज ही व्यक्त हो जाता है। कहानी के संवाद जीवन्त और प्रामाणिक तभी हो पाते हैं, जब वे पात्रानुकूल होते है। पात्र विशेष का जैसा व्यक्तित्व और मानसिक परिवेश होता है, उसके संवाद भी उसके अनुकूल होते हैं। संवाद के वर्ग, सम्प्रदाय और धर्म आदि के अनुकूल होते हैं तभी प्रभावी बन पाते है। पात्रानुकूलता वास्तव में कहानी के संवाद की ऐसी विशेषता है, जिसके महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता।

मन्नू भंडारी की प्रतिनिधि कहानियों में कथावस्तु में विस्तार देने वाले चरित्र चित्रण को महत्वपूर्ण बनाने वाले एवं कहानी के उद्देश्य को उजागर करने वाले संवाद स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है।

मन्नू भंडारी की 'ईसा के घर इंसान' शीर्षक कहानी को संवाद प्रधान कहा जा सकता है। संवादों के माध्यम से इस कहानी में कथावस्तु को गति मिलती है। परिवेश चित्रण में संवाद सहायक है। आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई ईसा के घर इंसान कहानी की नाविका का संवाद कथानक के परिवेश की ओर अर्थपूर्ण संकेत करता है– 'मुझे तो यह जगह बहुत पसंद है। पहाड़ियों से घिरा हुआ यह शहर और एकान्त में बसा यह कॉलेजा जिधर नजर दौड़ाओं हरा–भरा ही दिखाई देता है। परिवेश की इस रम्यता के साथ ही अगले संवाद में ही जेल के उल्लेख के माध्यम से उस परिवेश की यंत्रण की और चित्रण हुआ है, जिसका संकेत नायिका के

इस संवाद में विद्यमान है पर एक बात मेरी समझ में नहीं आई। यह कॉलेज जेल के सामने क्यों बनाया? फाटक से निकलते ही जेल के दर्शन होते हैं तो लगता है, सबेरे–सबेरे मानों खाली घड़ा देख लिया है, मन न जाने कैसा कैसा हो उठता है।''

चर्च के रहस्यमय वातावरण के भीतर चलने वाले कुचक को ईसा के घर इंसान कहानी में संवाद के माध्यम से ही उजागर कराने का प्रयास किया गया है। सिस्टर एंजिला का यह प्रलाप पूर्ण संवाद उल्लेखनीय है 'देखो कितनी सुंदर साड़ी पहन रखी है इसने फिर हम क्यों अच्छे कपड़े नहीं पहने? हम इंसान नहीं है? मैं नहीं रहूंगी यहाँ, मैं कभी नहीं रहूंगी। देखो मेरे रूप को। सिस्टर एंजिला के उमंगों से भरे और विद्रोही चरित्र का परिचय इस संवाद से मिलता है– 'मैं अपनी जिन्दगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के बीच नष्ट नहीं होने दूंगी। मैं जिंदा रहना चाहती हूँ, आदमी की तरह जिंदा रहना चाहती हूँ।''

''ईसा के घर इंसान का चरमोत्कर्ष भी सिस्टर लूसी के संवाद में ही निर्मित हुआ है। लूसी का संवाद चर्च के वातावरण पर से रहस्य का परदा उठाता हुआ सा लगता है 'एंजिला चली गई। फादर कुछ नहीं कर सके। – उनकी खुद की तबियत नहीं खराब हो रही है। सवेरे तो हम लोग भी वहाँ गए थे। कमरे में तो जाने नहीं दिया हमें, पर बाहर से फादर हमको देख रहा था। फादर हम सब पर भी बढ़ा रौब जमाया करते थे, एंजिला ने उनका नशा डाऊन कर दिया। फिर दोनों हाथ की मुठ्ठियां भींच कर उसने मन के छलकते आनंक पर जैसे काबू पा लिया) एंजिला को सुधार नहीं सके, अपनी इस असफलता का गम उन्हें बुरी तरह साल रहा है. आत्मग्लानि से बार–बार उनकी आँखों में आंसू आ रहे है। मदर बड़ी परेशान और दुखी है, उन्हें बहुत तसल्ली दे रही है। बार–बार ईसामसीह से उनकी शान्ति के लिए प्रार्थना भी कर रही है। और एक बड़ी ही व्यंगात्मक मुस्कुराहट उसके होंठो पर फैल गई।

'जीती बाजी की हार' कहानी में मुरला और आशा के पारस्परिक संवाद में ही चरमोत्कर्ष निर्मित होता है। मुरला और आशा के मध्य शर्त लगी थी कि मुरला भी घर–गृहस्थी के बगैर नहीं रह पाएगी। मुरला वास्तव में अविवाहित ही रहती है तथा उच्च अधिकारी के रूप में स्वतंत्र जीवन जीती है। वर्षों के अंतराल से जब मुरला और आशा की भेंट होती है और उनके पारस्परिक संवाद में ही कहानी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच कर उद्देश्य की प्राप्ति करती है। मुरला और आशा का संवाद निम्नानुसार है।

मुरला ने हंसते हुए कहा 'देख हार गई ना।' पर उसके स्वर में विजय का उपासन था। ''अच्छा जा छोड़ा मुझे कुछ नहीं चाहिए। आशा ने कहा –नहीं, नहीं तुझे माँगना ही होगा। जो चाहे सो माँग ले। मुरला एक क्षण को खामोश रही, फिर बोली अच्छा मांग लूं, इनकार तो नहीं करोगी।'' –

आशा हंसी 'अरे माँग ले ना। बहुत बड़ा दिल पाया है. फिर तू तो यो भी कुछ मांग से तो मना न करूं, और अभी तो हार कर बैठी हूँ, किस मुँह से मना करूंगी।

मुरला ने पास बैठी हुई आशा की सबसे छोटी लड़की को पास खींच कर प्यार करते हुए कहा तो अपनी यह बिटिया मुझे दे दें।''

उक्त संवाद में मुरला का अंतिम वाक्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। 'तो अपनी यह बिटिया मुझे दे दो इस वाक्य में मुरला के चरित्र की अपूर्णता और वात्सल्य की ललक उजागर होती है। यही संवाद कहानी का अंतिम वाक्य है। मुरला का संवाद कहानी का अंतिम वाक्य है। मुरला का संवाद कहानी को चरमोत्कर्ष पर ले जाकर पूर्णता प्रदान करता है।

मन्नू भंडारी की एक कमजोर लड़की की कहानी में संवादों का विस्तार देखा जा सकता है। रूपा और पिताजी के संवाद से कहानी का आरंभ होता है। इस कहानी में कथावस्तु का विस्तार रूपा और ललित के पारस्परिक संवाद के माध्यम से होता है। रूपा और ललित के संवाद, इन दोनों पात्रों के चरित्र को भी उजागर करते है। संवाद के द्वारा ही यह तथ्य सामने आता है कि कहानी की नायिका रूपा वास्तव में दुर्बल व्यक्तित्व वाली लड़की है। पिताजी हो अथवा ललित रूपा उनकी बातों के समक्ष अन्ततः समर्पण कर ही देती है। ललित विदेश चला जाता है और रूपा का विवाह वकील से हो जाता है। ललित पुनः आकर रूपा से मिलता है और भाग चलने के लिए जिद करता है। रूपा नहीं चाहते हुए भी अपने चरित्र की मर्यादा लांघकर ललित के साथ भाग जाने को तैयार हो जाती है। यह प्रसंग कहानी का है। नायिका घर छोड़कर जाने के लिए तैयार है और उसके पति घर लौटते ही का कारण बतलाते है। पति के संवाद रूपा के निर्णय को एक झटके में बदल देते

है। वह पर छोड़कर जाने का विचार त्याग देती है। कहानी को पूर्णता प्रदान करने वाले संवाद निम्नानुसार है –

उसने पूछा – 'बड़ी देर कर दी आज आपने' उसका स्वर कॉप रहा था।

'आज एक बड़ा पुराना मित्र मिल गया, उसी से बातें करने में देरी हो गई''।

अपने आप को स्वाभाविक बनाए रखने के लिए रूपा जल्दी–जल्दी खाना परोसने लगी। उसका हाथ काँप रहा था और वकील साहब बोले जा रहे थे बड़ी मुसीबत मेथा बेचारा उसकी स्त्री अपने किसी आशिक के साथ भाग गई। रूपा का चेहरा फक्क, उसका हाथ जहाँ का तहाँ रूक गया। ''मुझसे सलाह लेना चाहते थे कि क्या किया जाए। मैंने साफ कह दिया. कानूनी कार्यवाही करो। पर उनका कहना था कि पढ़ी–लिखी लड़की है, कानून के जोर से उसे अपना नहीं बनाया जा सकता।'

कपड़े बदलने का काम खत्म करके वकील साहब कुर्सी पर आ डटे थे। रूपा के पैर बुरी तरह लड़खड़ा रहे थे और वकील साहब अपनी ही धुन में बोले जा रहे थे। ''मैने तो साफ कह दिया, पढ़ी–लिखी हो तो सर पर बिठाओ। पढ़ी–लिखी है पढ़ी–लिखी है अरे पढ़ी–लिखी जो तुम भी हो भागने की बात को दूर रही, दो साल हो गए. मुझे कभी याद नहीं पड़ता कि तुमने आँख उठाकर किसी पुरुष से बात की हो। यह भी कोई बात हुई भला वकील साहब के उक्त संवाद में रूपा के प्रति उनके मन में असीम विश्वास की अभिव्यक्ति हुई है, जिसे सुनकर रूपा का घर छोड़कर जाने का निर्णय पलभर में तिरोहित हो जाता है उसकी आँख से प्रायश्चित के आँसू बहने लगते है। इस प्रकार वकील साहब के संवाद कहानी के उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होते है।

संवाद के अनेक रूप और स्तर होते है। व्यक्ति विशेष के साथ संवाद के स्वरूप और स्तर में भी भिन्नता जाती है। पत्नी से जो संवाद संभव नहीं हो पाता है, यह मित्र के साथ सहज ही हो जाता है। महू भंडारी की 'हार' कहानी में पति और पत्नी राजनैतिक प्रतिद्धन्दी है परंतु पति की मनोदशा उसके संवाद के द्वारा सामने आ जाती है ''पता नहीं क्या तुम दो–तीन दिन से बड़े खिन्न दिखाई देते हो। अरे मुझसे शर्त बद लो जीत तुम्हारी निश्चित है।'' मित्र ने कहा– 'इसी का तो गम है भाई, मेरी जीत की संभावना हीं मुझे खिन्न बनाए दे रही है। सोचता हूँ मैं हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूंगा। पुरुष हूँ और सहने का आदी, पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा ? तुम देखते हो पगली हो गई है इसके पीछे। वह हार को बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और सच पूछो तो इसीलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ' बड़े हताश और बुझे हुए स्वर में शेखर ने कहा।

'क्या पागलों जैसे बातें कर रहे हो। उनको जब तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं तो तुम क्यों उनकी चिंता से यो गमगीन हुए बैठे हो ? तुम्हारी निंदा करने में वह पागलपन की सीमा तक उतर आई थी, यह भी याद है ?'

मुझे उसके इस पागलपन से ही तो प्यार है शर्मा। जब देखता हूँ कि लड़कियाँ भावुकता को परे रखकर किसी बात पर यो खुले दिमाग से सोच सकती है तो भारत के सुनहले भविष्य की तस्वीर आँखों में उतर आती है।''

नारी के मन के रहस्य को नारी ही अधिक अच्छी तरह समझ सकती है और पारस्परिक संवाद की अंतरंगता में हृदय के रहस्य से परदा भी उठ जाता है। यह मन्नू भंडारी की ''एक बार और'' शीर्षक कहानी में बिन्नी और सुषमा के संवाद नारी–मन का दर्पण बन जाते है। मन में चलते भंवर को संवाद की सहजता में व्यक्त करने की विशेषता यहाँ देखी जा सकती है।

कुंज का पत्र पाकर जब उसने अपने जाने की बात कहीं थी, तो सुषी विस्मित–सी उसे देखती रह गई थी। रात में सोते समय केवल इतना ही कहा'' पहले का जाना तो तब भी समझ में आता था बिन्नी पर अब ? जो आदमी बार–बार वादा करके मुकर जाए, उससे क्या आशा करती है तू?'' आशा ? क्या हमेशा कुछ पाने की आशा से ही संबंध रखा जाता है।'' कहकर ही बिन्नी को लगा था कि वह सुषमा को समझा रही है या अपने मन को ? सम्बन्ध ?' सुषमा के स्वर में वितृष्णा भरी खीज उभर आई। 'तू अभी भी समझती है कि तू उसे प्यार करती है या कि वह प्यार है जिसके ओर से तु खिंची हुई चली जाती है? क्यों अपने को धोखा दे रही है बिन्नी ? अब तेरे संबंध का आधार प्यार नहीं प्रेस्टीज है. कुचला हुआ आत्मसम्मान। तुझे कुंज नहीं मिला तो तू अपने को बर्बाद करके भी यह संभव नहीं होने देगी कि वह मधु को मिले।''

बिन्नी भीतर तक तिलमिला उठी। मन हुआ चीख कर सुषमा को चुप कर दे, पर वह रूंधे गले से केवल इतना ही कह सकी। ''तू चुप हो जा सुषमा।

मन्नू भंडारी की ''दीवार बच्चे और बरसात'' शीर्षक कहानी संवाद प्रधान है। अपने पति के दुर्व्यवहार से परेशान होकर एक स्त्री अपना घर छोड़कर चले जाने को विवश हो जाती है। यह प्रसंग महिलाओं की बैठक में पारस्परिक संवाद के माध्यम से ही कहानी आरंभ से अंत तक पहुँचती है। भग्गो भाभी, बड़ी भाभी, मंझली भाभी और अम्मा के पारस्परिक संवाद में पारस्परिक रूढ़ीग्रस्त नारी के चरित्र को अभिव्यक्ति मिली है। इन संवादों से यह बात भी उजागर होती है कि नारी स्वयं ही नारी की सबसे बड़ी शत्रु होती है तथा परस्त्री की निंदा में उसे बहुत रस मिलता है। भग्गो भाभी का यह संवाद दृष्टव्य है– 'अरे ये सब तो नाटक होगा, नाटक। हमारे पुरखे तिरिय चरित्तर की जो महिमा बखान गए सो झूठी नहीं है। मैं तो कहूँ, पहले से ही किसी से लगी बैठी होगी मरी, बस बहाना चाहिए था।

महिलाओं की चौंकड़ी में संवाद का उत्साह हिलोरे लेता रहता है और अचानक दीवार दरक जाती है। कहानी का समापन संवाद के माध्यम से ही होता है, जहाँ दीवार टूटने के माध्यम से रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह की भावना प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त हुई है। कहानी के अंतिम संवाद में चरमोत्कर्ष के साथ उद्देश्य की प्राप्ति होती है ''गई कहाँ, कुछ पता लगा?'' भाभी में –– जिज्ञासा प्रगट की। 'जाने कहाँ मरी है।' बाहर फिर धमाका हुआ और रोने की मिली–जुली आवाजें आने लगीं। बड़ी भाभी गरम होती हुई बाहर गई– 'ये सत्यानासी बच्चे दो घड़ी चौन से नहीं बैठने देंगे।' पर बाहर जाते ही चिल्लाई 'अरे अम्मा देखो तो, सारी की सारी दीवार टूट गई।''

टूटी दीवार को देखकर अम्मा चिल्लाने लगती है. उनके संवाद में पुरानी पीढ़ी का प्रलाप प्रगट होता है ''उसी दिन मैंने कहीं थी कि इस पौध को उखाड़ फेंको पर सुनता कौन है मेरी इस घर में। देखों मरी जरा–सी है। पर सारी की सारी दीवार तोड़ कर रख दी''।

मन्नू भंडारी की प्रतिनिधि कहानियों में संवाद के सीमित परंतु सामर्थ्यपूर्ण प्रयोग के द्वारा परिवेश और चरित्र के अनेक आयाम उजागर हुए है। कहानी लेखिका ने अपनी संवाद योजना का सार्थक उपयोग करते हुए कथावस्तु की गति, रोचकता एवं औत्सुक्य की भी वृद्धि की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मन्नू भंडारी तीन निगाहों की एक तस्वीर पृ81
2. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ99
3. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ99.
4. मन्नू भंडारी मैं हार गई, पृ 99
5. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ 18.
6. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ21.
7. मन्नू भंडारी– मैं हार गई. पृ41
8. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ 63 64
9. मन्नू भंडारी मैं हार गई, पृ 10.
10. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ 10.
11. मन्नू भंडारी मैं हार गई. पृ. 17–18.